अहलेबैत (अ0) के चरित्र–आचरण की पाठशालाएँ बना दें और मजलिस में शरीक होने वाले भी सिर्फ सुनने, वाह–वाह, सुब्हानल्लाह के नारे लगाने और दूसरे कान से उड़ा देने के मन से नही, बल्कि हर मजलिस से कुछ न कुछ प्राप्त करके उठें। निश्चित ही हुसैन (अ0) की शहादत ने हमें संचार–प्रचार का एक उत्तम माध्यम दिया है जो किसी सम्प्रदाय को प्राप्त नहीं और वह हमारी मजलिसें हैं। बस आवश्यक्ता इतनी है कि इस माध्यम और साधन का सही उपयोग किया जाये। तलवार जितनी धार वाली और तेज़ होगी ग़लत उपयोगसे बुरे परिणाम निकलने की उतनी ही सम्भावना होगी। अब इस संचार माध्यम को भी ग़लत हाथों में जाने से बचाना चाहिए नहीं तो लाभप्रद परिणामों के बदले बुरे परिणाम प्राप्त होते चले जायेंगे।

' kcsv k' kjw

अल्लामा नज्म आफ़न्दी

चाँद कुमहलाया हुआ निकला शबे आशूर को
हो रही थीं तेज़ तलवारें नबी (स0) की आल पर
ज़िन्दगी की गोद में वो इज़्तेराबे कायनात
आह निकली सीन–ए–गेती से पहुँची ता फलक
कर्बला के दश्त में बेख़्वाब था जाने हिजाज़
मुत्तहिद था शुक्रे हक़ में सुब्ह करने के लिए
थे तबस्सुम रेज़ अन्सारे हुसैन (अ0) इब्ने अली (अ0)
अल्ला अल्ला चाहते हैं तुझको अन्सारे हुसैन
ऐसे बेपरवा कि जैसे सर ही शानों पर नही
कुछ सादाएँ आ रही थीं खेमा–ए–शब्बीर से
शम्आ लेकर रुए अक्बर देखने बैठी थी माँ
जाने क्यों कर रह गए पर्दे में असरारे अज़ल
नजमे गरदूँ सर बसिजदा है सितारे बे ज़बाँ

किस क़दर ग़म का अन्धेरा था शबे आशूर को
लरज़ा बर अन्दाम थी दुनिया शबे आशूर को
बन गई बे शीर का झूला शबे आशूर को
तोड़ कर फितरत का सन्नाटा शबे आशूर को
सो रहे थे यसरिबो बतहा शबे आशूर को
क़ाफ़िला दो रोज़ का प्यासा शबे आशूर को
ज़िन्दगी दिलचस्प थी गोया शबे आशूर को
ज़िन्दगी ने मौत से पूछा शबे आशूर को
जंग पर जब फैसला ठहरा शबे आशूर को
दर्द का तूफान था दरिया शबे आशूर को
सुब्हे महशर तक ठहरना था शबे आशूर को
नंगे सर थीं फातिमा ज़हरा शबे आशूर को
किस से पूछें तुम ने क्या देखा शबे आशूर को